DPB – 510 (Hin)

Final Year M.A. Degree Examination, August/September 2010
(Directorate of Distance Education)
HINDI
(Freshers)
Paper – IV : Prachin Evam Madhyakaleen Hindi Kavya
प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य

Time : 3 Hours Max. Marks: 80

I. सप्रसंग व्याख्या कीजिए । **(10×2=20)**

1) अ) ''बासिर सुख नाँ रैणि सुख, ना सुख सुपिनै माँहि ।
कबीर बिछुट्या राम स, नाँ सुख धूप न छाँहि ।।
बहुत दिनन की जोबती, बाट तुम्हारी राम ।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ मन नाहीं विश्राम ।

अथवा

आ) खेन खन नयन कोन अनुसरई, खेन खन बसन धूलि तन भरई ।
खेन खन दसन छटा छुट हास । खेन खन अधर आगे गहु बास ।
चउकि चलए खेन खए चलमंद, मनमथ पाठ पहिल अनुबन्ध ।
हिरदय मुकुल हेरि हेरि थोर । खेन आँचल दए खेन होय भरे ।
बाला सैसव तारुन भेंट । लखए न परिअ जेठ कनेठ ।।

इ) जाकर जीव मरै पर बसा, सूरी देखि से कस न हँ सा ।
आजु नेह सो होई निबेरा, आजु पहुमि तजि गगन बसेरा ।
आजु क्या पिंजर बंध टूटा, आजु परान परेवा छूटा ।
आजु नेह सों होई निरारा, आजु पेम संग चला पियारा ।

अथवा

ई) हमको हरि की कथा सुनाव ।
अपनी ज्ञान कथा हो ऊधो ! मथुरा ही लै जाव ।
रहुरे मधुकर ! लघु मतवारे
कहा करौ निर्गुण लैके हौं जीवहु कान्ह हमारे ।

P.T.O.